शिक्षा का उत्थान　　　　शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२ अंक-७　　　　माह : जनवरी २०२०

मिशन
शिक्षण
संवाद

VISION 2020

आओ हाथ से हाथ मिलाएं,

बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२
अंक-७

माह- अगस्त २०२०

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ0 अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र, मो0 अफजाल

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह,दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

किसी बालक के जीवन में उसकी प्राथमिक शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान होता है। यदि प्राथमिक स्तर पर ही गुणवत्ता के साथ–साथ सुरुचिपूर्ण शिक्षा मिले तो बालक की रुचि पढ़ाई–लिखाई में बढ़ जाती है और एक बार मन पढ़ाई में स्वतः लग गया तो उसका भविष्य सुनहरा होने से कोई नहीं रोक सकता। अतः परिषदीय शिक्षकों का ऊर्जावान और सक्रिय होना अति आवश्यक है जिससे वो विद्यार्थियों में ऐसा रूझान उत्पन्न कर सकें कि उनकी विद्यालय में उपस्थिति एवं शिक्षणकाल में ठहराव की स्थिति बनी रहे।

प्रसन्नता की बात है कि "मिशन शिक्षण संवाद" नाम का एक ऐसा मंच शिक्षकों के लिए उपलब्ध है जहाँ शिक्षकों द्वारा शिक्षकों के लिए उत्तम शिक्षण हेतु नयी–नयी शिक्षण विधियाँ और गतिविधियाँ उपलब्ध हैं। मिशन शिक्षण संवाद के अंतर्गत न केवल शब्द रूप में अपितु वीडियो रूप में भी उत्तम शिक्षण हेतु पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है और निरंतर इसमें वृद्धि होती जा रही है। मिशन शिक्षण संवाद शैक्षणिक गुणवत्ता हेतु अपने आप में एक नवाचार है।

मिशन शिक्षण संवाद द्वारा प्रतिमाह शैक्षिक पत्रिका का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण कदम है। इस पत्रिका के अद्यतन अट्ठारह अंक प्रकाशित हो चुके हैं। यह अपनेआप में एक बड़ी उपलब्धि है। इस पत्रिका के अनवरत प्रकाशन और वर्तमान अंक की सफलता हेतु शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। इसके साथ ही आशाएँ करता हूँ कि मिशन शिक्षण संवाद के मंच के जनपद के समस्त विद्यालयों में गुणवता एवं सुरुचिपूर्ण प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने में अमूल्य एवं सतत प्रयास करता रहेगा।

समस्त शिक्षक परिवार को शुभकामनाओं सहित।

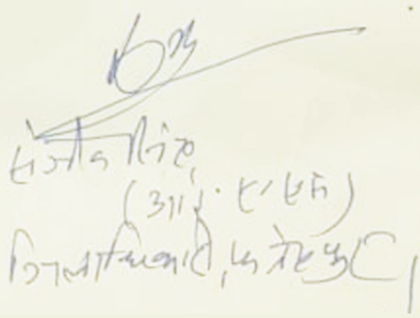

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

आओ हम सब करें स्वागत! नव वर्ष के विजन–2020 का, नव परिवर्तन, नव विचारों एवं नव संकल्प के साथ। जहाँ ''मैं ही कर्त्ता हूँ'' के नकारात्मक भाव से निकल कर ''हम सब करते हैं'' के सकारात्मक विचारों के साथ आगे बढ़ने का संकल्प हो।

आज हम सब जो भी अच्छा करने की कोशिश करते हैं। उसमें भले ही हम सभी की परिस्थितियाँ और परिणाम अलग–अलग क्यों न हों। लेकिन उसमें कुछ न कुछ समानता भी जिसका एक ही कारण है कि परम–पिता परमात्मा/ईश्वर/अल्लाह/गॉड/गुरू/माता–पिता आदि परम आदरणीय शक्तियों के संस्कार और आशीर्वाद। जिन्होंने हम सब को ऐसी परिस्थितियाँ, ऐसी सकारात्मक विचारशक्ति प्रदान की है जिससे हम सभी कुछ अच्छा करने के लिए आगे बढ़ते हैं, कोशिश करते हैं, समाज और राष्ट्र की सेवा करने की सोच पाते हैं। वरना इस जगत में कोई भी ऐसा प्राणी अथवा व्यक्ति नहीं है जो सकारात्मक सोच न रखता हो, जीवन में अच्छा न करना चाहता हो, लेकिन वह बेचारे हालातों, परिस्थितियों और संस्कारों से मजबूर हैं कि वह चाहकर भी न तो अच्छा सोच पाते हैं और न ही अच्छा कर पाते हैं।

इसलिए हम सभी को ''मैं ऐसा करता हूँ'' ''मैं ही ऐसा कर सकता हूँ'' ''हमारे कारण ही ऐसा हो रहा है'' ऐसी नकारात्मकता से दूर रहते हुए, परम–पिता परमात्मा का कोटि–कोटि आभार प्रकट करते हुए नववर्ष के विजन– 2020 का स्वागत करते हैं।

इसी विजन–2020 के स्वागत वर्ष के रूप में आप सभी के सामने मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका ''शिक्षण संवाद'' का अंक प्रस्तुत है। आशा है आप सभी इस वर्ष को सकारात्मक वर्ष एवं शिक्षक स्वाभिमान वर्ष के रूप में विजन–2020 के संकल्प को पूरा करने के लिए शिक्षण संवाद पत्रिका को स्वयं के साथ समाज के अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचाने में सहयोग करेंगे। इसके लिए मिशन शिक्षण संवाद परिवार आपका बहुत–बहुत आभारी रहेगा।

नव वर्ष, नव विचारों और नव संकल्प के साथ आप सभी आदरणीय को मिशन शिक्षण संवाद परिवार की ओर से नववर्ष के विजन–2020 की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	7–8
डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र की कलम से	9–10
मिशन गीत	11
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	12–14
निन्दक नियरे राखिए	15
टी.एल.एम.संसार	16–17
नवाचार	18
इंग्लिश मीडियम डायरी	19
प्रेरक–प्रसंग	20
सद्विचार	21
बाल फिल्म	22
बच्चों का कोना	23–25
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	26
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	27
योग विशेष	28–31
खेल विशेष	32–33
ग्रहण	34
मिशन हलचल	35–36

विचारशक्ति

मातृ भाषा का शिक्षा में महत्व

शिक्षण संवाद

मातृ भाषा जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी भाषा में कोई बालक सबसे पहले अपनी माँ, अपने पिता और अपने परिवेश के साथ अपने विचारों का सम्प्रेषण करता है। यही वह भाषा होती है जिसमें वह सबसे अधिक सहजता से अपने मनोभाव व्यक्त कर लेता है और यही उसके तर्क और चिंतन की प्रमुख भाषा हो जाती है। मातृभाषा के सहारे ही व्यक्ति के जीवन का अधिकांश भाग एक–दूसरे के साथ सुख दुःख साझा करने में व्यतीत होता है।

कोई भी बच्चा जब प्रथम बार विद्यालय की दहलीज पार करता है तब उसके पास स्वयं को व्यक्त करने के लिए केवल स्थानीय मातृभाषा ही होती है इसलिए अध्यापक और उसके बीच आत्मीय सम्बन्ध स्थापित होने के लिए दोनों का ही एक भाषाई होना आवश्यक हो जाता है। अगर हम अपने पाठ्यक्रम को देखें तो हमारे यहाँ त्रिभाषा सिस्टम लागू है। प्रारंभिक कक्षाओं में हिंदी और अंग्रेजी को ही मुख्य भाषा में शामिल किया गया है जबकि बाद की क्लास से संस्कृत, उर्दू आदि को अतिरिक्त भाषा के रूप में शामिल किया गया है। पाठ्यक्रम की प्रथम कक्षा में शिक्षण की चार दक्षताओं में से केवल 2 सुनना और बोलना पर ही मुख्य ध्यान केंद्रित किया जाता है। छात्र अपने परिवेश से अपनी स्थानीय बोलचाल की भाषा के हजारों शुद्ध और अशुद्ध शब्दों के साथ विद्यालय आता है और अध्यापक को अपने शिक्षण कौशल के सहारे इस स्थानीय भाषाई ज्ञान को व्यवस्थित व्याकरणीय भाषा में परिवर्तित करते हुए उसे बोलने और पाठ्यक्रम समझने लायक स्थिति में बदलना होता है।

सबसे अधिक समस्या गैर हिंदी भाषी राज्यों में आती है छात्र स्थानीय भाषा को आसानी से समझ सकता है और अपने तर्क द्वारा यथाउचित उत्तर दे सकता है पर अध्यापक को ध्यान पाठ्यक्रम की भाषाओं पर केंद्रित करना होता है। दो भाषाओं की दुविधा के बीच छात्र की मौलिक अभिव्यक्ति प्रभावित होने लगती है और वह छात्र स्वयं को अन्य भाषा में उतना बेहतर प्रस्तुत नहीं कर पाता जितना अध्यापक अपेक्षा करता है। शायद यही कारण है कि वह अन्य भाषा को भी एक विषय मानकर उसे रटने का प्रयास कर बैठता है।

हिन्दी भाषी राज्यों में अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के साथ भी यही दिक्कत आती है वह प्रारंभिक कक्षाओं में अंग्रेजी में बताई बात को किसी प्रकार से समझ तो लेते हैं पर उसका उत्तर सहजता से नहीं दे पाते जिससे वह हतोत्सहित होने लगते हैं। कई बार छात्र अंग्रेजी पर पूर्ण पकड़ न होने से गलत अर्थ समझ जाते हैं जिससे उन्हें विषय के मूल कॉसेप्ट समझ ही नहीं आ पाते। व्यक्ति का व्यवहार भी कंप्यूटर की तरह से है मसलन इनपुट को प्रोसेस करके ही उत्तर रूपी आउटपुट आते हैं ऐसे में सही आउटपुट के लिए भाषा को सही रूप में समझना और उसे मन मे प्रोसेस होना अत्यंत जरूरी है।

भाषा पर सही पकड़ न होने से कक्षाओं में पढ़ायी जाने वाली विषयवस्तु को छात्र अच्छे से समझ नहीं पाते जिससे उनके आधारभूत ज्ञान बचपन से ही कमजोर हो जाते हैं जिसका व्यापक असर बड़ी कक्षाओं में देखने को मिलता है। अक्सर भाषाई समस्या के चलते छात्र अपने पाठ्यक्रम को रट लेते हैं और परीक्षा पास कर आगामी कक्षाओं में चले जाते हैं पर जो ज्ञान उन्हें होना चाहिए

था वह वास्तव में उन्हें होता नहीं है।

भारत मे अंग्रेजी भाषा को श्रेष्ठ भाषा माना जाता है। भारत में यह भी माना जाता है कि जीवन में उच्च पद बिना अच्छी अंग्रेजी सीखे संभव नहीं है। हमारे देश में अच्छा लेखक बनने के लिए, शोध कार्य करने के लिए, उच्च शिक्षित समाज में उठने–बैठने के लिए अंग्रेजी को ही प्रमुख भाषा का दर्जा दे दिया गया है। हालात यहाँ तक हैं कि उच्च कक्षाओं पाठ्यक्रम हेतु अच्छे लेखकों की सभी किताबें अंग्रेजी में ही मिलती हैं। देश के बड़े प्रतिष्ठित लेखक अंग्रेजी भाषा में ही लिखते हैं। देश के शीर्ष पत्रकार अपने संपादकीय अंग्रेजी समाचार पत्रों के लिए ही लिखते हैं। देश का समस्त शोध कार्य अंग्रेजी में ही पब्लिश होता है ऐसे में अभिभावक अपने छात्रों को बचपन से ही अंग्रेजी पढ़ने या रटने को बाध्य कर देते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि छात्र की मौलिक चिंतन और अभिव्यक्ति बचपन से ही बाधित होने लगती है।

चीन और जापान जैसे देश इस बात को बहुत पहले ही समझ गए थे इसलिए उन्होंने अपनी पढ़ाई को अपनी मातृभाषा में करने पर जोर दिया उन्होंने दुनिया भर की अच्छी किताबों को अपनी भाषा मे ट्रांसलेट करवाकर छात्रों को उपलब्ध कराया ताकि छात्र विषयवस्तु को आसानी से ग्रहण कर सकें और उसके अनुसार उनका दिमाग तर्क कर सके। चीन ने कंप्यूटर की बोर्ड तक चाइनीज भाषा में बना डाला ताकि छात्रों को कंप्यूटर पर काम करने में दिक्कत न हो। इसका फायदा यह हुआ कि उनके यहाँ छात्र तकनीकी सीखने में अन्य देशों से ज्यादा निपुण हो गए हैं।

यह भी सच है कि आप कितनी भी अंग्रेजी पढ़ लो सपने आपको हिंदी में ही आते हैं इसका साफ अर्थ है कि आपका चेतन मन भले ही अन्य भाषा को सीख ले पर अचेतन मन आपकी दैनिक बोलचाल की परिवेशीय भाषा मे ही सहज है और मन जिस भाषा में ज्यादा सहज होता है उसी भाषा की सूचनाओं पर सबसे अधिक सहजता से चिंतन मनन करके अपनी प्रतिक्रिया दे सकता है।

हमारे देश मे प्रारंभिक कक्षाओं में स्थानीय भाषा मे शिक्षण हेतु पाठ्यक्रम को स्थानीय भाषा में लिखने की आवश्यकता है वहीं उच्चतर स्तर तक पाठ्यक्रम को हिंदी या क्षेत्रीय भाषा मे बदलने की भी आवश्यकता है ताकि छात्रों को पाठ्यक्रम को समझने में आसानी हो। देश मे शोध कार्यों को भी अंग्रेजी के साथ हिंदी और अन्य भाषाओं में प्रकाशित करने की शुरुआत करनी होगी ताकि छात्र उन शोध का लाभ ले सकें। छात्रों को अपनी भाषा में साहित्य और शोध को प्रस्तुत करने की भी सुविधा देनी होगी ताकि वह अपने कार्यों को अधिक सहजता से प्रस्तुत कर सकें। आज भी नासा संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों को अंग्रेजी में अनुवाद करवाकर उन्हें अपने वैज्ञानिकों को उपलब्ध करवा रहा है और उन पर व्यापक शोध हो रहा है उसी तरह विश्व के महत्वपूर्ण अंग्रेजी में लिखे साहित्य और शोध को भी भारत की प्रमुख भाषाओं में अनुवाद कर भारत के छात्रों को उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। ताकि छात्र अतिरिक्त भाषा की दक्षता में व्यय किये गए समय को किसी महत्वपूर्ण शोध में लगा सकें।

अवनीन्द्र सिंह जादौन
पूर्व माध्यमिक विद्यालय कैलोखर
जसवंतनगर इटावा
परिचय– टीचर्स क्लब उत्तर प्रदेश के महामंत्री, मिशन शिक्षण संवाद के संयोजक के रूप में शैक्षिक उन्नयन में सहभागिता, शैक्षिक लेखन में कई वर्षों से सक्रिय, पत्र–पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में कई आलेख प्रकाशित हो चुके हैं।

लर्निंग आउटकम को केंद्र में रखकर कार्य करें शिक्षक तो बने बात

–अधिगम स्तर में सुधार व समाज से शिक्षकों के प्रति सामान्य नजरिया बनाने के लिए जरूरी है कि शिक्षक बच्चों को सिखाने में लर्निंग आउटकम के मानदंडों को ध्यान में रखकर करें शिक्षण

वर्तमान में जब बेसिक शिक्षा के क्षेत्र में आये दिन शिक्षा की गुणवत्ता और शिक्षकों के कार्य करने के तौर तरीकों पर नकारात्मक चर्चा होनी सामान्य बात है। ऐसे में शिक्षक अपनी शिक्षण कार्य योजना में थोड़ा बदलाव लाकर बच्चों के अधिगम स्तर में सुधार लाकर समाज को अच्छा संदेश दे सकते हैं। इसके लिए शिक्षक साथियो को बस अपनी शिक्षण कार्य योजना में लर्निंग आउटकम को केंद्र में रखना होगा। ऐसा करके हम शिक्षक न केवल अपने छात्र–छात्राओं को गुणवत्तापरक शिक्षा दे सकेंगे बल्कि समाज से उठ रहे नकारात्मक सवालों का जबाब भी दे सकेंगे।

पिछले दिनों सभी विद्यालयों में लर्निंग आउटकम की जानकारी हेतु सभी शिक्षकों व छात्रों के लिए लर्निंग आउटकम की कक्षावार पत्रक व पुस्तकें भेजी गई है। शिक्षकों को खुद उनका अध्ययन करना चाहिए साथ ही बच्चों को भी उसके बारे में विस्तार से बताना चाहिए। ज्यादा बेहतर होगा कि शिक्षक उसे सभी अभिभावकों को भी साझा करें। इससे न केवल अभिभावक अपने बच्चों की प्रगति से लगाकर अवगत होते रहेंगे। साथ ही वह खुद अपने बच्चों की उपलब्धि स्तर को बेहतर बनाने में सहयोगी बन सकेंगे।

अब समय आ गया है कि जब शिक्षक साथियों को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि बच्चे हर तिमाही होने वाली लर्निंग आउटकम की परीक्षा में शामिल होकर निरन्तर बेहतर परिणाम लाकर दिखाएँ। ऐसा इसलिए भी जरूरी है क्योंकि यह न केवल प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में सुधार के संकेत हैं बल्कि 2021 में होने वाली नेशनल अचीवमेंट सर्वे परीक्षा में बेहतर परफॉर्मेसन्स कर देश मे प्रदेश के रैंकिंग को बेहतर दिखाने के लिए जरूरी कदम भी है।

लर्निंग आउटकम को अधिक से अधिक से अधिक लोगों तक साझा कर उसका फायदा बच्चों को पहुँचना भी आवश्यक है। इसके लिए ज्यादा बेहतर होगा कि हम शिक्षक सभी कक्षाओं के लर्निंग आउटकम के कक्षावार पोस्टर या फ्लेक्स बनवाकर प्रत्येक कक्षा में लगवा दें। इससे जहाँ शिक्षक अपने लक्ष्य के प्रति ज्यादा सतर्क रहेंगे तो बच्चे भी अपने लक्ष्य की रोज ही जानकारी करते रहेंगे और वह उसे प्राप्त करने की दिशा में अनवरत प्रयासरत रहेंगे। इसके अलावा छोटे–छोटे कक्षावार पर्चे छापकर उसे प्रत्येक बच्चे के अभिभावकों तक पहुँचाये जा सकते हैं। विद्यालय की एसएमसी बैठकों, शिक्षक अभिभावक बैठकों में भी उन्हें लर्निंग आउटकम के बारे में जानकारी देकर उनसे लगातार बच्चों का मूल्यांकन करने और उसके अनुसार सहयोग की बात कहने की आवश्यकता है। इस तरह हम सभी लर्निंग आउटकम के प्रति जागरूकता बढ़ाने और अपने साथी शिक्षकों, छात्र–छात्राओं व अभिभवकों से ज्यादा से ज्यादा साझा कर बच्चों के बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

वर्तमान में जब विभाग में शिक्षकों के वार्षिक चरित्र पंजिका बनाने की कवायद चल रही है और शिक्षकों के इस मूल्यांकन में बच्चों के प्रदर्शन सूचक अंकों के आधार पर उनका वर्गीकरण करने की बात चल रही है। ऐसे में उन्हें लर्निंग आउटकम आधारित अपनी तैयारी पर और गंभीरता से कार्य करने की आवश्यकता है क्योंकि इस प्रक्रिया में भी लर्निंग आउटकम आधारित ज्ञान का परीक्षण महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ज्यादा अच्छा होगा इस समय लर्निंग आउटकम पर विशेष फोकस कर शिक्षक साथी अपने कैरियर में पदोन्नति व दूसरी सुविधाओं की पात्रता में आगे रखने की योजना पर काम करें। वह दिन हम शिक्षकों के लिए भी गर्व का दिन होगा जब लर्निंग आउटकम आधारित परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन के प्रदेश का नाम रोशन होगा और हम सबका सम्मान बढ़ेगा।

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान प्राप्त शिक्षक/संपादक
आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, बस्ती

मिशन गीत

एक धन्यवाद मिशन के नाम

मिशन शिक्षण संवाद में
जबसे मैंने जगह पाई है।
एक अलग सी खुशी
मन में उमड़कर आई है।।

1)वरिष्ठों के बीच में
जो जगह पाई है।
उसी से तो नित नया
सीखने की उमंग जगाई है।।

2)भावों को व्यक्त करने की
जो कला इसने सिखाई है।
मुझे नहीं लगता मैंने कहीं भी
ये दौलत कमाई है।।

3) हर व्यक्ति खुद में
अनेक रंग समेटे है।
बच्चों की मुस्कान के लिए प्रयास
मैंने इन्हीं से सीखे हैं।।

4) इक ऐसा भी
अनोखा पल आयेगा।
जब हमारा मिशन राष्ट्र में नहीं
अंतरराष्ट्रीय उपलब्धता पायेगा।।

5) बस इन्हीं शब्दों को
गूँथते हुए मैंने इक माला बनाई है।
सारे चुने हुए हीरो में मैंने भी
छोटी सी अपनी जगह बनाई है।।

6) दिल से धन्यवाद
इस मिशन का देती हूँ।
निरन्तर आगे बढ़ते रहे सब
बस इन्हीं शब्दों के साथ
आज की विदा लेती हूँ।।

आयुषी अग्रवाल,
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय शेखूपुर खास,
विकास खण्ड–कुन्दरकी,
जनपद–मुरादाबाद।

बेसिक शिक्षा
के
अनमोल रतन

३८१ वर्षा श्रीवास्तव पूर्व माध्यमिक विद्यालय जुझारपुर ब्लाकरू अकराबाद, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/11/blog-post_80.html

३८२ फरजंद अली प्राथमिक विद्यालय–मधुपुरी, स्वार, रामपुर, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/11/blog-post_18.html

३८३ ब्रजेश नाथ तिवारी प्राथमिक विद्यालय श्रीपुरा, पिपरौली, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/11/blog-post_43.html

३८४ मोहम्मद गुफरान प्राथमिक विद्यालय घरवासीपुर, हसवा, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/11/blog-post_35.html

३८५ अंजू यादव संविलियन विद्यालय सुखलालपुर (जूनियर), बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/11/blog-post_371.html

३८६ सर्वेश कुमार अवस्थी (प्रधानाध्यापक) प्राथमिक विद्यालय बाबूपुर, अमौली, फतेहपुर,

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/11/blog-post_45.html

३८७ रेशू पांडेय पूर्व माध्यमिक विद्यालय इमिलिया, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/11/blog-post_227.html

३८८ भइया लाल मौर्य सहायक अध्यापक पू०मा०वि० चौहट्टा भिटौरा, फतेहपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/11/blog-post_109.html

३८६ रश्मि शर्मा (प्रधानाध्यापिका) प्राथमिक विद्यालय सिहोरा द्वितीय, विकास खंड– राया, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश।

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/11/blog-post_617.html

३९० विनय कुमार प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय पुर्वा खगन, विकासखण्ड – सहार, जनपद– औरैया (उ. प्र.)

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/12/blog-post_19.html

३९१ राम प्रसाद सहायक अध्यापक कम्पोजिट स्कूल अहिन्दा, हथगाम, फतेहपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/12/blog-post_7.html

३९२ रेखा बोरा प्रधानाध्यापिका, रा०प्रा०वि० मौन पोखरी, ब्लाकः जिला––चम्पावत, उत्तराखण्ड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/12/blog-post_49.html

३९३ सुमन शर्मा (इं.प्र.अ.) पू०मा०वि० मांकरौल, इगलास, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/12/blog-post_9.html

३९४ सूर्य प्रकाश सिंह (प्रधानाध्यापक), प्राथमिक विद्यालय डेण्डासई धाता, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/12/blog-post_16.html

३३१ मालती गौतम (प्र०अ०) उच्च प्राथमिक विद्यालय, मडराक, लोधा, अलीगढ़

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/12/blog-post_36.html

३९५ नीरज तिवारी (सहायक अध्यापक) प्राथमिक विद्यालय खड़ैतपुरा ब्लाक– वार, जनपद– ललितपुर, उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/12/blog-post_92.html

निंदक नियरे राखिए

पुरस्कारों और प्रमाण-पत्र की सार्थकता

शिक्षण संवाद

एक समय था जब यदा–कदा किसी शिक्षक को पुरस्कार प्राप्त होता था । वो भी किस तरह प्राप्त होता था यह सर्वविदित है। फिर एक दौर ऐसा आया जब सबको उनके कार्य के प्रतिफल प्रोत्साहन के रूप में प्रदान किया जाने लगा। इससे पुरस्कारों का महत्व भी बढ़ा और लगने लगा कि बिना जोड़ तोड़ के योग्य व्यक्ति प्राप्त कर रहा है। फिर उसके बाद आरम्भ हुई एक अंधी दौड़ प्रमाणपत्र और पुरस्कार प्राप्त करने की। हद तो तब हो गई जब भेजे गए आवेदन में से तथाकथित उसके सुयोग्य व्यक्ति को यदि न प्राप्त हो तो वो सिस्टम के साथ पूरी चयन प्रक्रिया पर ही सवाल खड़े कर देता है। सबका किसी भी तथ्य को देखने का नजरिया एक हो ये आवश्यक नहीं है, हो सकता है जो आपके अनुसार आपका श्रेष्ठ प्रदर्शन हो उन्हें आपकी बात समझ ही न आ रही हो। यूँ किसी भी चयन प्रक्रिया पर हमें सवाल नहीं खड़े करने चाहिए। एक बार में ही सारे अवसर खत्म नहीं हो जाते, हम अगली बार पुनः प्रयास करेंगे और अच्छे से करें तो सफलता हमें अवश्य ही प्राप्त होगी। फिर क्या फर्क पड़ता है कि हमें इस बार नहीं मिला हमारे किसी अन्य शिक्षक साथी को ही प्राप्त हुआ है यह कहाँ कम है। हमें तो अगले को टीम भावना के साथ आगे बढ़कर सम्बंधित को प्रोत्साहित करना चाहिए न कि उसमें कमियाँ निकालनी चाहिए।

इसके पश्चात यह ध्यान देने योग्य बात है कि पुरस्कार प्राप्त करने के बाद आपकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। आपको समाज मे अपनी छवि एक मृदुभाषी और विनम्र अध्यापक की बनानी होगी।

पुरस्कार प्राप्त करने के बाद सबसे ज्यादा ध्यान देने योग्य बात यह है कि जिस कार्य, जिन बच्चों की वजह से यह पुरस्कार हमें प्राप्त हुआ है। कहीं उनके प्रति हम लापरवाह तो नहीं हो गए। पुरस्कार के प्राप्त करने के पश्चात हमारी जिम्मेदारी इन बच्चों के प्रति और बढ़ जाती है, यदि इन बच्चों का विकास पहले के अपेक्षा और अच्छी तरह से हो तभी हमारे पुरस्कार या प्रमाण पत्र की सार्थकता है, अन्यथा नहीं।

ज्योति कुमारी,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोइलरा,
विकास क्षेत्र–औराई,
जनपद–भदोही।

कक्षा—एक हेतु शिक्षण सहायक सामग्री निर्माण

कक्षा एक सरकारी विद्यालयों की बुनियादी कक्षा है। किसी भी बच्चे में भाषा विकास, गणितीय अवधारणा तथा लेखन के प्रति रूचि व रुझान यहीं से प्रारंभ होता है। मूलतः सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को उनके घर से पढ़ाई का वातावरण नहीं मिल पाता। अतः वर्णों, अंकों तथा अल्फाबेट्स की पहचान करने में उन्हें थोड़ा कठिनाई होती है तथा इनमें रूचि भी नहीं होती। अतः बच्चों को स्वयं के साथ जोड़ने हेतु तथा अंत तक कक्षा में रोके रखने हेतु कक्षा— एक में रुचिपूर्ण शिक्षण नितांत आवश्यक है।

रुचिपूर्ण शिक्षण के अंतर्गत शिक्षकों द्वारा बच्चों को अनेक रोचक गतिविधियाँ कराई जाती हैं तथा बच्चों हेतु अनेक प्रकार के TLM का निर्माण किया जाता है। TLM का उद्देश्य मात्र पढ़ना ही नही बल्कि बच्चों को समुचित रूप से लिखना सिखाना भी है।

कक्षा एक हेतु TLM निर्माण करते समय ध्यान रखने हेतु मुख्य बिंदु—

1. जिस भी विषय का TLM बनायें, उसी विषय की लाइन्स चार्ट पर लगा लें। इससे बच्चों को अपनी नोटबुक व TLM में साम्यता नजर आती है।

2. वर्ण, संख्या या अल्फाबेट उचित स्पेस देते हुए लाइन्स में ही लिखें।

3. लिखते समय अक्षरों के आकार का विशेष ध्यान रखें। बड़े आकार के अक्षरों से बच्चे जल्दी प्रभावित होते हैं तथा उन्हें सुगमता से समझ पाते हैं।

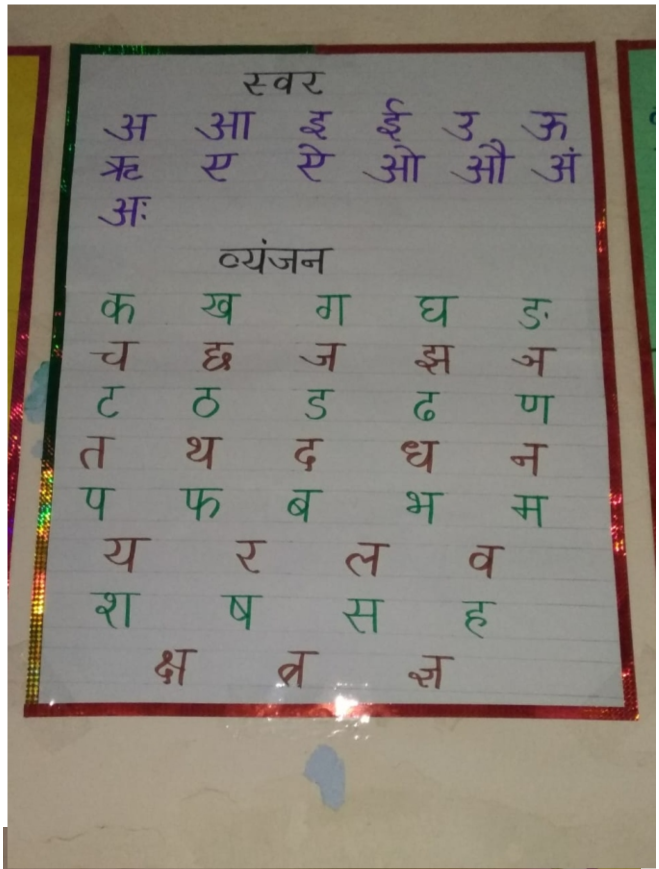

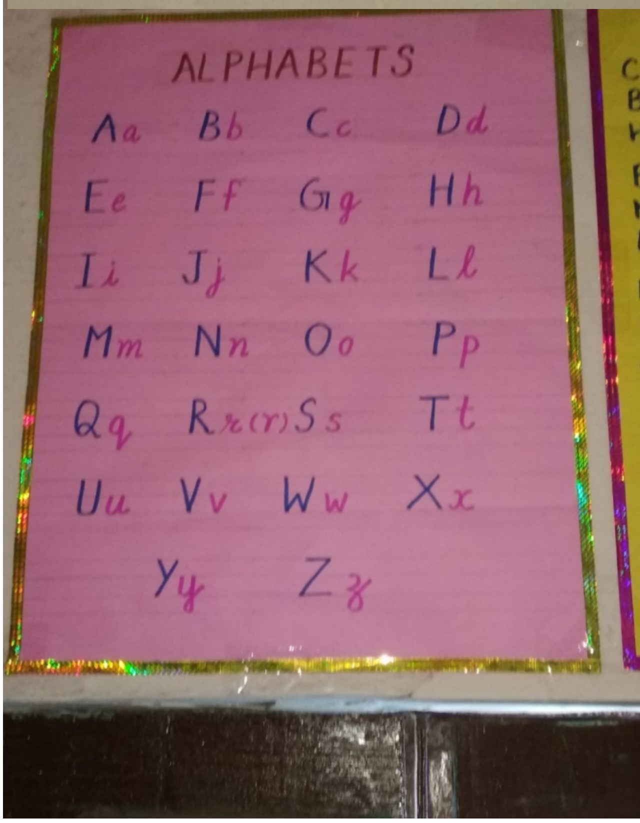

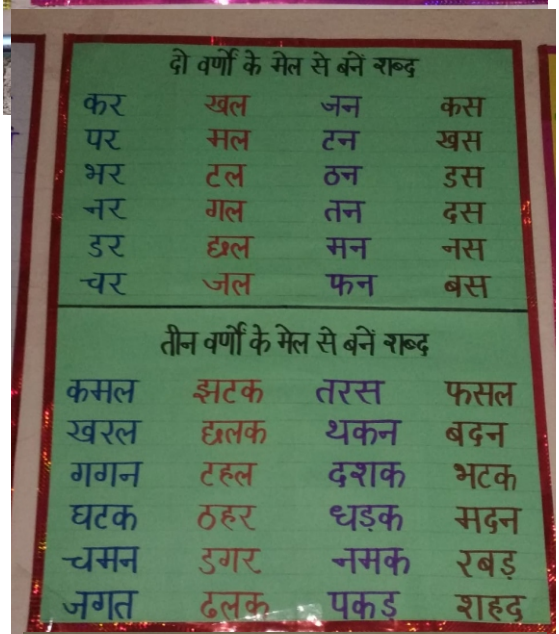

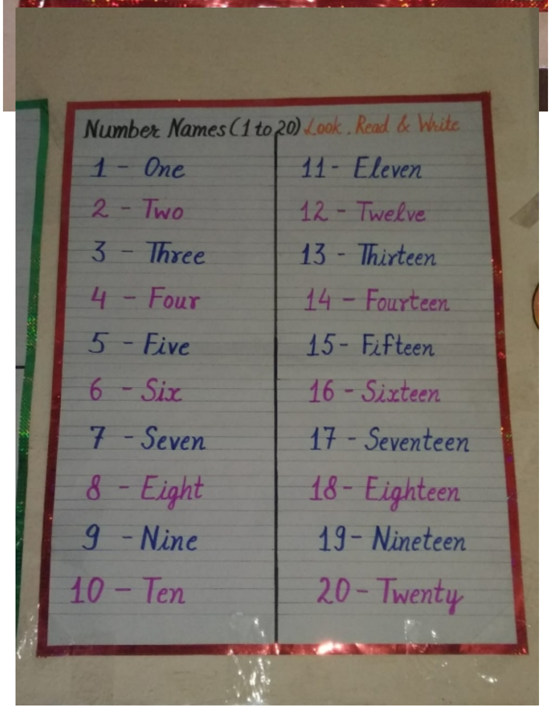

4. अक्षरों की बनावट का विशेष महत्त्व है। आप जैसा मॉडल बच्चे के समक्ष प्रस्तुत करेंगे, बच्चा उसी को कॉपी कर लेगा। अतः अक्षर सुस्पष्ट व सुडौल होने चाहिए।

5. कक्षा एक के बच्चों को बोध की अपेक्षा अनुकरण के माध्यम से ही लिखना सिखाया जा सकता है। अतः आप जैसा उनसे अपेक्षा करते हैं, उसी अनुरूप TLM भी बनायें।

6. बच्चों को बोल–बोलकर लिखने का अभ्यास कराएँ, इससे बच्चा सिर्फ कॉपी नहीं करेगा बल्कि किये जा रहे कार्य को पहचानेगा भी तथा याद भी रखेगा।

7. लाइनयुक्त TLM का लाभ आपको प्रत्यक्ष रूप से मिलेगा बच्चे की सुंदर हैंडराइटिंग के रूप में। बच्चा एक बार जो formation अपनाएगा, उसमें निरंतर सुधार ही होगा जोकि स्थायी होगा।

यदि आप विद्यालय में अकेले हैं या फिर किसी जरुरी पंजिका कार्य में व्यस्त हैं तब भी आपके बच्चों के पास स्वयं करने हेतु पर्याप्त मैटीरियल उपलब्ध रहेगा। इस प्रकार सोच–विचार कर बनाया गया TLM आपके शिक्षण कार्य को अति सुलभ व लाभदायक बना सकता है।

कक्षा– एक हेतु हिंदी भाषा, गणित व इंग्लिश के कुछ सरल TLM आप सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ।

रीता गुप्ता,
सहायक अध्यापिका,
मॉडल प्राइमरी स्कूल बेहट नंबर एक,
विकास क्षेत्र–साढोली कदीम,

कक्षा के सितारे

समस्या या नवाचार की आवश्यकता........

ग्रामीण बच्चों को विद्यालय तक लाने के लिए प्रेरित करना।

बच्चों को उनके व्यक्तित्व विकास के लिए सोचने के लिए प्रेरित करना।

सामग्री—दो काले चार्ट, सिल्वर और गोल्डन शीट, फेविकॉल कैंची आदि।

प्रयोग—ग्रामीण परिवेशीय बच्चों को अपने जन्मदिन की जानकारी तक नहीं रहती और ना ही उनके माता—पिता इस विषय में जागरूक होते हैं। कक्षा में अपने जन्मदिन की तारीख को बोर्ड पर लगे देख उनका उत्साह देखते ही बनता था।

कक्षा के सितारे कक्षा के आसमान में ....

कक्षा के माह के उपस्थिति सितारे।

समय से विद्यालय आने वाले सितारे।

कक्षा में सर्वाधिक एक्टिव छात्र सितारा।

कक्षा के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी।

अपना नाम बोर्ड पर देख बच्चों के चेहरे खिल उठे और अन्य बच्चों में अगले माह अपना नाम बोर्ड पर लाने की प्रेरणा मिली।

श्री गजेन्द्र सिंह BEO नगर क्षेत्र, हापुड़ द्वारा इस नवाचार की प्रशंसा की एवम इन सितारों के लिए विशेष ताली बजवाई

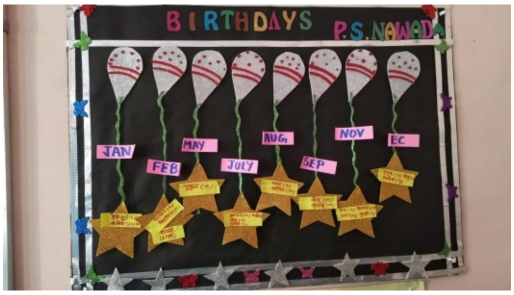

निष्कर्ष—इस नवाचार से विद्यालय के अन्य बच्चों को भी प्रेरणा मिली तथा अभिभावकों में भी इस नवाचार से सकारात्मक संदेश गया है।

डॉ0 रेणु देवी,

सहायक अध्यापक,

प्राथमिक विद्यालय नवादा,

विकास खण्ड व जनपद—हापुड़।

English Medium Diary

English Medium Schools : A Boon

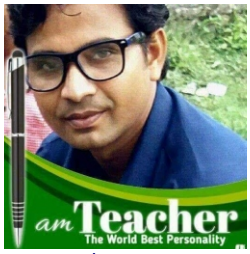

शिक्षण संवाद

English is very important in our lives. Today people who do not know English language find themselves backward. English is the third most spoken language in the world. The importance of English has increased greatly in our country. Private English medium schools have opened everywhere. Every parent wants his child to speak the English language fluently. English is no less than a boon for students because nowadays all the exams are conducted in English language.

10% of the population in India speaks English language. The importance of English in the country is increasing everyday. Hindi is considered the national language but works in the High Court and in the Supreme Court are done in English language.

An English medium education system is one that uses English as the primary medium of instruction particularly where English is not the mother tongue of the students.

English medium schools are better because in present generation ,English is the global language and it is used world widely. So if we want our students to reach higher education ,it must be only in English.

This is why our state government decided to convert the existing primary school into English medium institutions. Following which the teachers were given thorough training and provided with English books. Efforts were made to ensure that teachers teach proper English to students and help them to pronounce words correctly . The response of these schools in the very first session was really overwhelming . In the beginning of second session there was a magical change in enrollment at these schools . It also resulted in the high attendance of students and this is the only reason which pushed the government to plan more such schools. The attendance of students went up in a big way . This led the government to plan more such schools.

If all goes well these schools will bring revolutionary change in primary schools . Collective efforts of teachers, guardians and governed is must . So what is in hand must be done with enthusiasm and passion without cursing the government and other things .Then and only then we can expect good result.

Waseem Ahmad,
Assistant Teacher,
Primary School Mahmoodpura Kanth,
Block-Chhajlet ,
District-Moradabad.

प्रेरक प्रसंग

समस्या का सामना ही उसका समाधान है

शिक्षण संवाद

एक बार स्वामी विवेकानंद जी दुर्गा देवी के मंदिर से निकल रहे थे, तभी वहाँ पर मौजूद बहुत सारे बन्दरों ने उन्हें घेर लिया। बन्दर उनसे प्रसाद सामग्री छीनने लगे, स्वामी जी बहुत भयभीत हो गए और खुद को बचाने के लिये दौड़कर भागने लगे तो बन्दर उनके पीछे पड़ गये।

तभी पास खड़े एक वृद्ध सन्यासी ये सब देख रहे थे। उन्होंने स्वामी जी को रोका और कहा—रुको, डरो मत उनका सामना करो। वृद्ध सन्यासी की बात सुनकर स्वामी जी तुरंत पलटे और बन्दरों की ओर बढ़ने लगे। उनके ऐसा करते ही सारे बन्दर भाग गये। फिर स्वामी जी ने वृद्ध सन्यासी का धन्यवाद किया।

यदि तुम किसी समस्या से भयभीत हो तो उससे भागो मत, पलटो और उसका सामना करो।

— स्वामी विवेकानंद

अशोक कुमार,
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय रामपुर कल्याणगढ़,
विकास खण्ड—मानिकपुर,
जनपद—चित्रकूट।

सद्विचार

नमन विवेकानन्द को

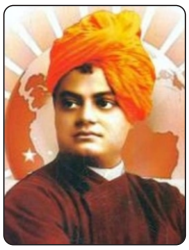

शिक्षण संवाद

स्वामी विवेकानंद एक प्रकाश पुञ्ज की भाँति इस धरा पर तब अवतरित हुए जब हिन्दू धर्म के विषय में लोगों का विश्वास डांवाडोल हो रहा था। यह समय वह समय था जब उस समय के तथाकथित पण्डित और पुरोहितों ने हिन्दू धर्म को घोर आडम्बरवादी व अंधविश्वास पूर्ण बना दिया था।

ऐसे में इस प्रकाश पुञ्ज का अवतरित होना मानो हिन्दू धर्म के लिए वरदान साबित हो गया। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि शब्द बेहतरीन जादूगर होते हैं। शब्दों में इतनी शक्ति है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड का जादू शब्दों में बस जाता है।

शब्द उस जादूगर के पिटारे की तरह है जो मनुष्य के मानसिक विकास से प्रादुर्भूत होते हैं। हम अपने जीवन में इस विशेष शक्ति का प्रयोग कर लोगों को अपना बना सकते हैं। विचार और शक्ति आपस में गुंथी हुई होनी चाहिए तभी हम इस संसार को, सम्पूर्ण मानव जाति को बंधुत्व का पाठ पढ़ा पाएँगे।

विवेकानंद जी ने कहा कि मैं ये मानता हूँ कि शिक्षा से ही व्यक्ति स्वयमेव स्वतंत्रतापूर्वक विचार कर सकता है। शब्दों की महिमा से तो सब भली भाँति परिचित हैं पर शब्द रटे न हों। हम शिक्षा क्या है? इस पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि जिस संयम के द्वारा इच्छा शक्ति का प्रवाह और विकास निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर रहे और फलदायक रहे तो वह शिक्षा कहलाती है।

उनका मानना था कि शिक्षा को दरवाजे–दरवाजे जाना चाहिए। यदि कोई खेतिहर बच्चा शिक्षा तक नहीं पहुँच पाता है तो हमें परछाई की तरह उसको शिक्षा देने में देर नहीं करनी चाहिए।

प्रत्येक बालक को शिक्षा पाने का अधिकार है। यदि उसकी शक्ति के अनुसार उसे शिक्षा दी जाए तो उसकी योग्यता निखर जाएगी। यदि वह अपनी शक्ति के अनुसार शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाता है तो हम उसे कोसें न। हम उसे प्रेम के वशीभूत करके, उसके समक्ष सत्य उद्घाटित करके उसे आगे ला सकते हैं। "हम चाहें कितनी ही पुस्तकों को कंठस्थ क्यों न कर लें जब तक हृदय से सामंजस्य न बिठा पाये तो सब बेकार।"

सारी शिक्षा का केन्द्र मनुष्य का निर्माण होना चाहिए। शिक्षा का ध्येय है मनुष्य का विकास। शिक्षा जब अपना प्रभाव डालती है तो सारे समाज में भीनी–भीनी महक बिखेर देती है। साथियों पर जादू कर देती है और हम अत्याधिक क्रियाशील हो जाते हैं।

शिक्षा का प्रचार–प्रसार जितना अधिक होगा उतने ही लोग उससे अधिक लाभान्वित होंगे।

अतः एकाग्रचित्त होकर बच्चों को धर्म, विज्ञान और आध्यात्म से जुड़ना होगा जिससे हमारा भारतवर्ष पुनः सर्वोच्च शिखर पर विराजमान रहे।

ऐसे महान पुरोधा और युवाओं के प्रेरणा स्रोत विवेकानन्द जी को नमन।

नमन विवेकानन्द को,
जाग्रति के नव छन्द को।

डॉ0 प्रवीणा दीक्षित,
हिन्दी शिक्षिका,
के.जी.बी.वी. नगर क्षेत्र,
जनपद–कासगंज।

भागो भूत
(मार्मिक बाल फिल्म)

शिक्षण संवाद

यह कहानी है एक बहुत ही सुलझे–समझदार बच्चे 'नानू' और सुनसान उजाड़ में रहने वाले उसके अधेड़ उम्र दोस्त 'भागो' की, जिसे लोग अनजाने में ही भूत मान बैठे हैं। एकांत में रहने के इच्छुक इस 'भूत' के हाथों जब–जब ग्रामीणों का भला होता है तो उसका माध्यम बनता है 'नानू' और पूरा गाँव नानू को ही हीरो मानने लगता है।

लेकिन अंततः स्वाभिमानी नानू को अपनी यह अनुचित तारीफ चुभने लगती है और वह 'भूत' के मना करने के बावजूद सबको सच्चाई बता देता है, लेकिन लोगों के वहाँ पहुँचने से पहले ही 'भूत' ......

पर, अंत में जब नानू को 'भूत' की असलियत पता चलती है तो वह भी हक्का–बक्का रह जाता है और बड़ी मासूमियत से उसे पुकारता है। क्या थी 'भूत' की हकीकत?... क्या 'भूत' लौटता है?....

यह मार्मिक कहानी दिखाती है :

निश्छल–मासूम हृदय में औरों को जीतने की सामर्थ्य।

समाज की व्यावहारिक लेकिन कटु सच्चाइयाँ।

फिल्म में बच्चे का चेहरा बहुत साधारण लेकिन उसकी चौतन्य जीवंतता उतनी ही असाधारण है जो दिखाती है कि भीतरी खजाने के आगे ऊपरी आवरण कितना तुच्छ होता है।

और असली अहसास तो यह समीक्षा पढ़कर नहीं, फिल्म देखने से ही होगा....

समीक्षा–प्रस्तुति : प्रशान्त अग्रवाल,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय डहिया,
विकास क्षेत्र फतेहगंज पश्चिमी,
जनपद–बरेली (उ.प्र.)

बच्चों का कोना

मम्मी जी

नाना जी की राजदुलारी, मेरी प्यारी मम्मी जी।।
सभी जरूरत समय पे पूरी, करें हमारी मम्मी जी।।

कॉपी बस्ता पेन पेंसिल इधर–उधर मैं फैलाती।
सही जगह पर चीजें रखो मम्मी जी ही समझातीं।
पढ़ूँ देर तक मैं, पर जागें साथ बेचारी मम्मी जी।
हर पेपर की संग मेरे करतीं तैयारी मम्मी जी।।

दूध और सब्जी से मेरा बहुत दूर का नाता है।
पिज्जा, बर्गर, नूडल्स खाना मुझको हरदम भाता है।
सभी सब्जियाँ फल खाओ कहके हारीं मम्मी जी।
मुझसे कोसों दूर भगाए हर बीमारी मम्मी जी।।

परियों जैसे ठाठ मेरे हैं, मम्मी जी के होने से।
उनकी दुनिया हिल जाती है एक मेरे ही रोने से।
मेरे पीछे घूमें, छोड़ के दुनिया सारी मम्मी जी।
मुझको मेरी गुड़ियों जैसी लगतीं प्यारी मम्मी जी।।

डॉ0 मीनाक्षी शर्मा,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय नियामतपुर,
विकास खण्ड–भावलखेड़ा,
जनपद–शाहजहाँपुर।

कौवे का इलाज

अस्पताल में डरते–डरते,
पहुँचे कौआ राम।
डॉक्टर बोला क्यों आए हो,
बतलाओ क्या काम।
कौआ बोला कष्ट गले में,
मेरे हाय अपार।
इसीलिए दौड़ा आया हूँ,
हो करके लाचार।
सुई लगा दो मिक्सर दे दो,
या फिर ऐसी गोली।
जिससे मेरी हो जाए,
कोयल जैसी मीठी बोली।

कृष्ण गोपाल,
इं0 प्र0अ0,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय दलेलनगर,
विकास खण्ड–अजीतमल,
जनपद–औरैया।

आलसी रामू

शिक्षण संवाद

अरे रामू बेटा उठ जा दिन निकल आया है उठ जा। झाड़ू लगाते हुए कुमकुम चाची रामू को जगाए जा रही थीं। वह था कि उठने का नाम ही नहीं ले रहा था। अरे क्या करूँ...???... यह तो जाने कब समझेगा मैं तो इसे समझा समझाकर थक गई हूँ। उठ जा राजा बेटा उठ जा.... कुमकुम चाची रामू के सिर पर हाथ फिराते हुए बुदबुदा रही थीं। पंकज यह सब सुन रहा था।

अरे यह क्या? ये तो अब भी नहीं जग रहा इसको कौन समझाए कि जो लोग समय से नहीं जागते वो जीवन में पछताते हैं। पंकज तैयार होकर अपना बस्ता लेकर आता है, आकर चाची से बोला चाची रामू को स्कूल भेजो, मैं तो जा रहा हूँ।

कुमकुम दुःखी होकर कहती है कि वह अभी सो रहा है। गुस्से में उसे अज्ञानी और आलसी कहती हैं और घर के काम में लग जाती है। तभी बृजेश खेत से वापस घर आता है, रामू को सोते देख गुस्सा करता है। रामू, रामू आवाज देता है तभी रामू आलस में हिलने लगता है। बहुत देर होते ही बृजेश उसे डाँटता है और फिर भी रामू आँखें मलते हुए लेटा रहता है।

बृजेश रामू के पिता गुनगुनाने लगते हैं। वो सूरज को बुला रहे हैं कि सूरज दादा सूरज दादा आलसी लोगों को आकर जगाओ अपनी किरणें बिखराओ, फिर ठण्डी सी हवा महसूस होती है तो बृजेश कहते है अरे पवन भईया पवन भईया आओ तेज हवा चलाओ और आलसी आदमी को उठाओ। रामू की कुछ–कुछ समझ में आ रहा था कि यह सब मेरे लिए कहा जा रहा है। रामू उठकर सीधे घर में माँ को ढूँढता है जो बड़े प्यार से पहले ही उसे जगा रही थीं। रामू धीरे–धीरे अपने रोज के काम करता है, फिर उसके पिता बृजेश उसे बुलाते हैं। समझा ही रहे होते हैं कि आलस नहीं करना चाहिए आलसी आदमी परिश्रम करने वाले लोगों से हमेशा पीछे रह जाता है और पछताता है। तभी मोहित आकर रामू को आवाज देता है रामू तैयार होकर मोहित के साथ स्कूल जाता है। दोनों रास्ते में आपस में बातें करते जाते हैं मोहित को रामू सारी बातें बताता है। मोहित उसे समझाता है कि दादा सही कह रहे हैं। मेरे पापा भी मुझसे ऐसा ही कहते थे जब वो जिंदा थे। मैं बुआ के यहाँ गया था तो वहाँ मैंने बड़ी–बड़ी ऊँची–ऊँची बिल्डिंग देखीं, लिफ्ट से

ऊपर चढ़ा बहुत मजा आया।

रामू बोला मोहित क्या तेरी बुआ के पास बहुत पैसा है?

मोहित ने कहा अरे नहीं परन्तु सुबह सभी जल्दी उठकर नहा धोकर अपने–अपने काम पर ऑफिस जाते हैं। सभी अच्छे कपड़े पहनते हैं खाना बहुत अच्छा खाते हैं। बड़ी गाडी में एक साथ घूमने भी जाते हैं। अब शायद रामू समझ चुका था कि उसकी मम्मी और पापा उसे हमेशा यही कहते हैं कि आलस्य छोड़ो और पढ़ाई करो तभी तुम एक अच्छे इंसान बन सकोगे, वरना तो तुम्हें गरीब ही रहना पड़ेगा और कभी भी अच्छा जीवन नहीं जी पाओगे। रामू सोचता जाता है।

गरीबी में रोता हुआ बालपन, क्या करुँ कि मिटे भूख रोता है मन।

ये लम्बी सड़क पार्क ऊँचे मकान, सभी के लिए बहुत चाहिए धन।।

दोनों मित्र स्कूल तक बातें करते–करते पहुँच चुके थे, दोनों ने पढ़ाई करना शुरु कर दिया। धीरे–धीरे दोनों मित्रों के स्वभाव में काफी बदलाव आया और दोनों मन लगाकर पढ़ाई करने लगे। दोनों के नंबर भी परीक्षा में अच्छे आने लगे। उन दोनों को आस–पास के अन्य बच्चे भी देख–देखकर पढ़ने लगे और एक दिन रामू पढ़ लिखकर बहुत ही अच्छा इंसान बन गया।

श्रीमती नैमिष शर्मा,

सहायक अध्यापक,

पूर्व माध्यमिक विद्यालय तेहरा,

विकास खंड–मथुरा,

जिला–मथुरा।

उत्तर प्रदेश।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

निष्ठा तू श्रेष्ठा है

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/12/blog-post_12.html

शिक्षण संवाद

निष्ठा तू श्रेष्ठा है,
तू ही समग्र शिक्षा की पराकाष्ठा है।

तू केन्द्रीय शिक्षा की अविरल धारा है,
तुझसे ही सिंचित, पोषित विद्यालय हमारा है।

हर शिक्षक में तू निष्ठा का बल भरती है,
शिक्षार्थी के अज्ञानता का तम हरती है।

निष्ठा तू हम सबकी अनुरागी है,
अखिल भारत की तू पथानुगामी है।

सब आशा में हैं कि क्या कुछ दे पायेगी हमें,
हर शिक्षक का विश्वास जगेगा शायद यही समझाएगी हमें।

निष्ठा के हैं विषय अनेक
कला, समेकित शिक्षा की पहले विद्यालय आंकलन सीख रहे थे हर एक,
निष्ठा में आई सी टी व टेस्ट की थी नवीनता
शिक्षा की थी समानता अब आयी समता।
पाठ्यक्रम व सामाजिक व्यक्तित्व का
कैसे हो विकास?
शिक्षण शास्त्र एवम प्रभावी नेतृत्व का हो गया आभास

कर विचार रख निष्ठा,
समय से अगर न जागेंगे,
शिक्षा की समग्रता को,
कैसे पूरित कर पाएँगे।
विद्यालय पूर्व से उच्च शिक्षा की लंबी सवारी तूने पायी है,
शिक्षा की सभी पहले निःसंदेह तुझमें समायी हैं।
राष्ट्र हित की शिक्षा का अपूर्व, अदभुत खजाना है
शिक्षा सबका विकास तूने ही पहचाना है।।

रचयिता
प्रकाशी सेमवाल,
सहायक अध्यापक,
रा उ प्रा विद्यालय महरगाँव,
विकास खण्ड–थौलधार,
जनपद–टिहरी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड।

''नारी शिक्षा की केंद्र बिंदु हैं'' महान विचारक रूसो ने कहा था ''आप मुझे सौ आदर्श माताएँ दें मैं आपको एक आदर्श राष्ट्र दूँगा''।

मैं एक शिक्षिका हूँ और उससे भी पहले एक माँ हूँ,

एक महिला शिक्षिका होने के नाते मैं ये मानती हूँ कि एक नारी अत्यंत सहजता से अपने छात्रों की संवेदना, उनके मनोभाव, उनकी कुंठा, उनकी इच्छा, उनकी रुचि उनकी अरुचि को बिना कहे समझ लेती है। अत्यंत बार मुझे अनुभव हुआ कि कोई छात्रा परेशान है पूछने पर उसने मुझे अपनी समस्या बताई मैं सहजता से उनके घर गई उनकी माताओं से चर्चा की और छात्राओं की समस्या का निवारण किया, जो करना सम्भवतः एक पुरुष अध्यापक हेतु थोड़ा मुश्किल होता।

एक नारी और एक माँ होने के नाते मै अपने छात्रों से मात्र प्रेमवत व्यवहार ही नहीं करती अपितु उन्हें अनुशासन में रखने हेतु कभी–कभी थोड़ी सख्ती भी दिखाती हूँ जैसे एक कुम्भकार हल्की–हल्की थपकी देकर अपने पात्र को सही आकार देता है उसी प्रकार हम नारियों को भी ये ज्ञात है कि हमें कब, किस प्रकार, किस भाव की अभिव्यक्ति करनी है।

मुझे अत्यंत हर्ष होता है कि मेरे विद्यालय में बालक से अधिक संख्या बालिकाओं की है जिसका कारण सम्भवतः महिला शिक्षिकाओं की अधिकता है क्योंकि माता–पिता अपनी बच्चियों को महिला शिक्षक होने पर विद्यालय भेजने में अधिक सुविधा का अनुभव करते हैं। अनेकों बार मैंने अनुभव किया कि कोई समस्या लड़कियाँ अपने माता–पिता से भी साझा नहीं कर पाती वो वह हमसे साझा करती हैं।

एक नारी में ममता होती है, जिसके कारण वह अधिक सहनशील होती है छात्रों के उत्सुकतावश पूछे गए प्रश्न हमें कभी क्रोधित नहीं करते, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर अत्यंत धैर्य की आवश्यकता होती है। जब एक बच्चे को प्रारम्भ से लेकर चलना होता है , पहली बार पेंसिल पकड़ने से लेकर, पहली बार सुनाने, आकृति पहचानने या कक्षा में बैठने के नियम से लेकर वेशभूषा तक हमें एक माँ की तरह उस बच्चे का साथ देना होता है जो एक नारी से अच्छा कोई नहीं कर सकता।

आज मुझे एक शिक्षिका होने की नाते अत्यंत हर्ष होता है जब मैं अपने देश की बच्चियों को इतना आगे बढ़ते देखती हूँ क्योंकि वास्तविक राष्ट्र व समाज निर्माता यही हैं।

इंदु शर्मा,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय अनवरपुर,
विकास क्षेत्र–हापुड़,
जनपद–हापुड़।

गणित, विज्ञान एवं कला विषयों में योग का समावेशन

शिक्षण संवाद

संक्षिप्त परिचय

बच्चे राष्ट्र की अमूल्य धरोहर होते हैं और किसी भी राष्ट्र को सबल शक्तिशाली एवं अच्छे नागरिक देने का कार्य शिक्षा करती है। शिक्षा का संबंध बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व आध्यात्मिक विकास से है जो भावनात्मक एवं संज्ञानात्मक पक्ष को विकसित कर समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना करने में सहायक होती है। इसलिए हमारी शिक्षण प्रक्रिया इस प्रकार नियोजित होनी चाहिए कि छात्र–छात्राओं का समग्र विकास हो सके। समग्र विकास एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु योग एक ऐसी विधा है जो मानव चेतना को उच्चतम स्तर पर लाने का कार्य करती है। विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में अष्टांग योग का विशेष योगदान है। अष्टांग योग में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि निहित है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए इस नवाचार में ऐसी गतिविधियों एवं क्रियाकलापों का समावेश किया गया है कि जो विभिन्न विषयों (गणित, विज्ञान, भाषा, कला, संगीत एवं सामाजिक विषयों) को पढ़ाते समय कक्षा में रुचिपूर्ण वातावरण के सृजन के साथ ही पाठ्य वस्तु को बोधगम्य बनाने में सहायक है तथा विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि के साथ–साथ उनके आत्मविश्वास व एकाग्रता में बढ़ोतरी में भी सहायक है।

नवाचार के क्षेत्र

कक्षा/विद्यालय में जटिल विषयों को सीखने के स्तर में सुधार

बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास

बच्चों के आत्मविश्वास एवं एकाग्रता में अभिवृद्धि

छात्रों के विद्यालय छोड़ने और अनुपस्थिति की दर में कमी।

कक्षा/विद्यालय में संप्रयोग

यह सभी तरह की कक्षाओं तथा विद्यालयों के लिए कारगर है। शिक्षक छात्रों की आयु एवं विषय के अनुसार उपयुक्त योगासन का चयन करते हैं।

नवाचार का सार

1. बच्चों का मन बड़ा ही चंचल होता है। यदि कक्षा में ज्यादा देर तक एक ही बिंदु पर चर्चा होती रहे तो उसकी एकाग्रता में भटकाव होता है। उसी समय यदि विषय वस्तु से जुड़ा हुआ सूक्ष्म योग करा दिया जाए तो बच्चे पुनः विषय वस्तु को सीखने के लिए मनोयोग से तैयार हो जाते हैं और उनकी एकाग्रता में वृद्धि होती है, जिससे वे विषय वस्तु को आसानी से ग्रहण कर लेते हैं।

2. शिक्षक गणित, विज्ञान, भाषा, कला, संगीत एवं सामाजिक विषयों को पढ़ाते समय योग और सूक्ष्म व्यायाम को शामिल करके विषयों को रोचक, बोधगम्य बना सकता है। योग, सूक्ष्म व्यायाम की विभिन्न गतिविधियाँ बच्चों को स्वयं करके सीखने के लिए प्रेरित करती हैं जिससे उनमें स्व–अधिगम क्षमता, बौद्धिक क्षमता एवं आत्मविश्वास में अभिवृद्धि होती है।

आवश्यक सामग्री

किसी विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं है। छात्रों के बैठने के लिए चटाई और साफ–सुथरा

मैदान विद्यालय में ही उपलब्ध होता है।

क्रियान्वयन

विद्यालय आने के बाद सभी छात्र प्रार्थना सभा में एकत्रित होते है।
प्रार्थना समाप्त होने के पश्चात सभी छात्र चटाई बिछाते हैं।
शिक्षक सूक्ष्म व्यायाम के पश्चात उन्हें सूर्य नमस्कार के विभिन्न आसन करवाते हैं।

1. योग से गणित की शिक्षा–

शिक्षक द्वारा प्रार्थना सत्र में सूर्य नमस्कार एवं योगासन कराते समय गणित में विभिन्न कोणों को आसानी एवं रुचिपूर्ण तरीके से समझाया जाता है जिसे बाद में कक्षा में जाकर विद्यार्थी बड़े ही मनोयोग से इन्हें अपने मन मस्तिष्क में ग्रहण कर लेते है। (चित्र – सूर्य नमस्कार)

उदाहरण

कोण	माप	आसन
शून्य कोण	0 डिग्री का कोण	शवासन या सावधान की मुद्रा
न्यून कोण	0 से 90 डिग्री तक के कोण	उत्तानपादासन
समकोण	90 डिग्री का कोण	सर्वांगासन
अधिक कोण	90 से 180 डिग्री के बीच	हलासन
ऋजुरेखीय / सरल कोण	180 डिग्री का कोण	शीर्षासन, ताड़ासन
वृहत कोण	180 से 360 डिग्री	अर्द्धकटि चक्रासन
संपूर्ण कोण	360 डिग्री कोण	पूर्ण चक्रासन

(चित्र – योग द्वारा दर्शाते हुए कोण)

वृत्त

शिक्षक बच्चों को सूक्ष्म व्यायाम कराते हुए पैरों के पंजों से वृत बनने की संकल्पना को समझाता है इसी क्रम को आगे कमर, हाथ, गर्दन से वृत्त बनवाया जाता है। (चित्र– वृत्त बना हुआ)

त्रिभुज

त्रिकोणासन कराते हुए त्रिभुज को समझाया जाता है। (त्रिकोणासन चित्र)

पंचभुज

उत्कटासन कराते समय छात्रों से दोनों हाथों की हथेलियों को ऊपर की दिशा में मिलाने को कहा जाता है फिर कंधों के बीच बनी आकृति को पंचभुज से संबंधित किया जाता है। बाद में बच्चे कक्षा में पंचभुज पढ़ते समय स्वयं पंचभुज की आकृति बना लेते हैं।

धन एवं ऋण संख्या

प्राणायाम कराते समय साँस लेने की क्रिया में धन संख्या 1, 2, 3..... तथा साँस रोकने पर 0 एवं साँस छोड़ने पर – 1 – 2 – 3...आदि धन एवं ऋण संख्याओं को बताया जाता है।

2. योग द्वारा विज्ञान की शिक्षा

शिक्षक विद्यालय में कराए जाने वाले योगासनों द्वारा बच्चों को विभिन्न जीव–जंतुओं के नामों से परिचित करवा सकता है जैसे ताड़ासन (ताड़ का वृक्ष), वृक्षासन (वृक्ष), भुजंगासन (साँप), मत्स्यासन (मछली), शशकासन (खरगोश), मकरासन (मगरमच्छ), गोमुख (गाय), तितली आसन (तितली), उष्ट्रासन (ऊँट) भ्रामरी (भँवरा) आदि।

शिक्षक कक्षा में विज्ञान के विभिन्न बिंदुओं जैसे– श्वसन, पाचन, ऊष्मा, घर्षण बल, सजीव–निर्जीव, चाल, गति, कार्य आदि को योग के माध्यम से स्पष्ट कर सकते हैं–

बिंदु	योग को सम्मिलित करते हुए शिक्षक द्वारा कराई जाने वाली गतिविधियाँ
श्वसन	शिक्षक अनुलोम–विलोम द्वारा श्वसन को स्पष्ट करते हैं।
ध्वनि ऊर्जा	भ्रामरी, ''ओम'' का उच्चारण करवाकर
ऊष्मीय ऊर्जा	सूर्य नमस्कार करवाकर (क्योंकि सूर्य नमस्कार करते समय पोषित ऊष्मीय ऊर्जा प्राप्त होती है)
ऊष्मा	हथेलियों को रगड़वाकर
गैसीय अवस्था	पवनमुक्तासन करवाकर
सजीव–निर्जीव	श्वसन क्रिया द्वारा
वायु	मुँह में हवा भर कर मुँह फैलाकर बताना कि वायु स्थान घेरती है।
यौगिक श्वांस–	जिसमें लंबी गहरी साँस लेना व छोड़ना
ऊर्जा संरक्षण	प्राणायाम द्वारा हम अपने शरीर को ऊर्जा संरक्षित कर सकते है।
पेशीय बल	योग, व्यायाम, शारीरिक क्षमता के आधार पर माँसपेशियों के बल को स्पष्ट करना।

धनुरासन द्वारा बल को स्पष्ट करना।

3. योग द्वारा कला शिक्षण–

कला विषय के अंतर्गत शिक्षक विभिन्न आकृतियों को बनवाते समय उनसे संबंधित सूक्ष्मयोग, प्राणायाम एवं आसन करवाकर विषय को और अधिक रुचिकर बना सकते हैं।

उदाहरण– शिक्षक बच्चों से नाव (नौका) का चित्र बनाने के लिए कहने से पहले नौका के कार्य, उसकी आकृति के बारे में वार्तालाप करेंगे। शिक्षक कक्षा में नौका से संबंधित नौकासन करेंगे और बच्चों से नौका की आकृति को अपने मन–मस्तिष्क में उतारने के लिए कहेंगे। इसके बाद छात्र नौकासन करते हुए नाव का चित्र बनाकर उसमें रंग भरेंगे।

नवाचार के लाभ

प्राथमिक विद्यालय के ज्यादातर छात्र–छात्राएँ शारीरिक, मानसिक रूप से अस्वस्थ रहते हैं जिसके कारण उन्हें शिक्षा का विकास जितना होना चाहिए नहीं हो पा रहा है। इस नवाचार के क्रियान्वयन के उपरांत निम्नलिखित लाभ देखे गये–

1. सूक्ष्म व्यायाम एवं योग के लगातार अभ्यास से बच्चों के संवेदी अंगों एवं माँसपेशियों का विकास होता है।
2. छात्रों के अस्वस्थ शरीर को सक्रिय एवं रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।
3. योग से बच्चों के मन–मस्तिष्क में स्थिरता, आत्मविश्वास आने के कारण पढ़ाई में ध्यान केंद्रित में सहायता मिली है। जिससे उनके शैक्षिक विकास स्तर में वृद्धि हुई है।
4. शिक्षक एवं छात्रों में योग के प्रति जागरूकता बढ़ी है।
5. शिक्षक एवं छात्रों में योग को अन्य विषयों के साथ समन्वय करने की दक्षता का विकास हुआ, जो नीरस विषयों को रोचक बनाने में सहायक सिद्ध होता है।
6. छात्रों की उपस्थिति दर में ठहराव हुआ है।

डॉ0 वसीम अहमद,
सहायक अध्यापक,
संविलयन मॉडल अपर प्राइमरी स्कूल सोहना,
विकास खण्ड–शाहबाद,
जनपद–रामपुर।

खेल–विशेष

कुश्ती

शिक्षण संवाद

दो लोगों के मध्य खेला जाने वाला यह खेल विश्व के प्राचीनतम खेलों में से एक है। 2005 ई0 पू0 मल्लयुद्ध के नाम से प्रसिद्ध यह खेल द्वंद युद्ध कुश्ती, दंगल के नाम से जाना जाता है। वास्तव में यह दाँव–पेंच और दमखम का खेल है। इसे मात्र मनोरंजन का ही नहीं बल्कि शक्ति का प्रतीक भी माना जाता है। राजा–महाराजाओं से लेकर जमींदारों तक ने पहलवानों को संरक्षण देते हुए कुश्ती को प्रोत्साहित किया था।

कुश्ती के प्रकार

कुश्ती ऐतिहासिक खेल के साथ–साथ पौराणिक कथाओं से भी प्रसिद्ध होने के कारण 4 प्रकार की कही जाती है–

1: भीमसेन कुश्ती – भीम जी के नाम पर।

2: हनुमंती कुश्ती – हनुमान जी के नाम पर इसमें दाँव पर जोर दिया जाता है।

3: जामवंती कुश्ती – जामवंत के नाम पर यह कुश्ती कई लोगों के मध्य होती है।

4: जरासंध कुश्ती – राक्षस जरासंध के नाम से यह प्रचलित कुश्ती है।

कुश्ती का स्थान: आधुनिक कुश्ती में 9 मीटर व्यास का एक गोलाकार अखाड़ा होता है जिसके अंदर 7 मीटर व्यास का केंद्रीय वृत्त रेखांकित होता है, जो खेल क्षेत्र कहलाता है। यदि गद्दे पर प्रतियोगिता होती है तो गद्दा 1 मीटर ऊँचा होता है।

कुश्ती की अवधि: प्रत्येक कुश्ती का राउंड कुल 6 मिनट होता है। यह समय 3–3 मिनट के दो भागों में बँटा होता है। प्रत्येक राउंड के बाद 30 सेकंड का विश्राम होता है।

कुश्ती के लिए भार वर्ग प्रतियोगिता प्रारंभ होने से एक दिन पूर्व खिलाड़ी का भार लिया जाता है, जिसे कुल 10 भागों में विभाजित किया गया है–1.25–27kg, 2. 27–30kg, 3. 30–33kg, 4.33–37kg, 5.37–41kg, 6.41–45 kg, 7.45–50kg, 8.50–55kg, 9.55–60kg, 10. 60–65kg......

कुश्ती से संबंधित प्रमुख नियम

Pull पुलः जब कोई पहलवान चित्त होने के खतरे से बचने हेतु संघर्ष करता है और उसकी पीठ गद्दे की ओर 90° से अधिक मुड़ जाती है तथा वह अपने शरीर के ऊपर के हिस्से से प्रतिरोध करता है तो इस स्थिति को पुल कहा जाता है।

चित्त : जब एक पहलवान के दोनों कंधे एक साथ गद्दे को छू लेते हैं तथा दूसरे का उस पर नियंत्रण हो जाता है इस स्थिति को चित होना कहा जाता है। यह हार का सूचक है।

सडेन डेथः जब दोनों पहलवानों के अंक बराबर होते हैं तो सडेन डेथ द्वारा निर्णय अंतिम होता है। इसके लिए 3 मिनट का समय होता है और जो पहलवान पहला अंक जीतता है वह विजेता होता है।

कुश्ती के महान खिलाड़ी गामा पहलवान को रुस्तम ए जहां कहा जाता है।

दारा सिंह फ्री स्टाइल कुश्ती में विश्वविख्यात पहलवान रहे हैं।

योगेश्वर दत्त 2012 ने ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों में कांस्य पदक विजेता।

सुशील कुमार 2012 में लंदन ओलंपिक खेलों में रजत पदक विजेता।

साक्षी मलिकः राजीव गांधी खेल रत्न एवं पद्मश्री विजेता महिला पहलवान।

विनेश फोगाट 2014 में राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक विजेता।

उपरोक्त खिलाड़ियों के अलावा हमारे भारत के गाँव में न जाने कितने पहलवान गुमनामी की राह पर हैं।

आमिर खान की प्रचलित फिल्म फोगाट बहनों पर केंद्रित है जो लिंग भेद को समाप्त करती हुई हमें यह बताती है की पहलवानी सिर्फ पुरुषों का क्षेत्र नहीं है। यह भी एक कला है, जो मनोरंजन के साथ–साथ शारीरिक स्वास्थ्य लाभ भी देती है। हमारे देश के गाँव में दंगल के नाम से प्रचलित यह गाँवों का प्रमुख खेल है जिसका आयोजन लगभग प्रत्येक गाँव में दशहरा के दिन किया जाता है। लोग जीतने वाले पहलवान को नगद राशि इनाम देकर उसका हौसला बढ़ाते हैं और बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न विजयदशमी का त्योहार धूमधाम से मनाया जाता है।

मोनिका सिंह,
सहायक शिक्षिका,
उच्च प्राथमिक विद्यालय मलवां प्रथम,
विकास खण्ड–मलवां,
जनपद–फतेहपुर।

माह जनवरी 2020 की गतिविधि

"ग्रहण"

विगत माह अर्थात दिसंबर 2019 की 26 तारीख को पूर्ण सूर्य ग्रहण की प्राकृतिक घटना हुईद्य शायद आप इसे न देख पाए हों या देखने न दिया गया हो। देख न पाए हों इसके कई भौतिक कारण हो सकते हैं जैसे – पृथ्वी पर आपकी भौतिक स्थिति, खराब मौसम आदि और देखने न दिया गया हो इसका एक कुख्यात कारण अंधविश्वास ही है । 21वीं शताब्दी के बदलते परिवेश में अब मनुष्य ने अन्तरिक्ष की सीमाएँ लांघ दी हैं और अब शायद ही सौरमंडल में कुछ अछूता है । इसलिए अंधविश्वास को त्यागकर वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देते हुए पूरी सुरक्षा के साथ इस प्रकार की प्राकृतिक घटनाओं का अवलोकन करें और उसे सरल व सहज बनाने के लिए आपको इस प्रयोग को करके देखना होगा और अपने दोस्तों से साझा भी करना होगा। तो आइए इसे देसी तरीके से करके देखते हैं ...

क्या करना है ?

प्रकाश श्रोत के आगे अवरोध रखकर ग्रहण को समझाना

क्या चाहिए ?

मोमबत्ती(माना सूरज), माचिस, एक छोटी गेंद(माना चन्द्रमा), एक बड़ी गेंद (माना पृथ्वी), एक मित्र

कैसे करना है ?

1. कक्षा–कक्ष / कमरे में खिड़कियाँ बंद कर अन्धेरे जैसा माहौल बनायें
2. माचिस से मोमबत्ती जलाकर एक स्थान पर रखें
3. आप मोमबत्ती और बड़ी गेंद के बीच छोटी गेंद रखें
4. क्या दिख रहा है – छाया (प्रच्छाया – बहुत अँधेरा, उपछाया – आंशिक अंधेरा)
5. जो गेंद आपको आंशिक दिखायी दे या बिलकुल न दिखाई दे उसी के नाम पर ग्रहण कहलाता है
6. सूरज, चन्द्रमा और पृथ्वी को एक सीध में लायें और चन्द्रमा की छाया पृथ्वी पर बनायें, इस व्यवस्था को आप सूर्य ग्रहण कहेंगे क्यूँकि ऐसी परिस्थिति में सूरज पूर्ण या आंशिक रूप से नहीं दिखेगा
7. अब सूरज, चन्द्रमा और पृथ्वी को पुनः एक सीध में लायें और पृथ्वी की छाया को चन्द्रमा पर बनायें, इस व्यवस्था को आप चन्द्र ग्रहण कहेंगे क्यूँकि ऐसी परिस्थिति में चन्द्रमा पर पृथ्वी की छाया (प्रच्छाया या उपछाया) बनती है

क्या कर लिया ?

आपने सूर्य ग्रहण व चन्द्रग्रहण को करके समझ लिया

शाबास ! आप ने कर दिखाया

इनसे भी कर सकते हैं

विद्युत बल्ब, गोलाकर कोई भी फल

चर्चा के बिंदु

अमावस्या , पूर्णिमा, यह घटनाएँ प्रत्येक माह क्यों नहीं होती हैं ? बच्चे शिक्षक से प्रश्न करें ! व शिक्षक बिना गूढ़ अध्ययन करे इस प्रश्न का उत्तर न दें

ध्यान रखें

1. मोमबत्ती को पूरी सावधानी से जलायें
2. उसे किसी समतल स्थान पर ही रखें
3. ज्वलनशील पदार्थों से दूर ही इस प्रयोग को करें

मनीष कुमार

राज्य अध्यापक पुरस्कृत
स.अ. / राष्ट्रीय विज्ञान संचारक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय शिवगंज, सहार

Youtube: GyanKa Yan

Email: manishyadav1407@gmail.com

मिशन हलचल

डायट प्रयागराज में संपन्न हुई मिशन शिक्षण संवाद शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला

शिक्षण संवाद

दिनांक 18 दिसंबर 2019 को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान प्रयागराज में मिशन शिक्षण संवाद द्वारा शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें जनपद के विभिन्न ब्लाकों से उत्कृष्ट शिक्षकों ने प्रतिभाग किया। कार्यशाला का शुभारंभ संयुक्त निदेशक मंडलीय श्री दिव्यकांत शुक्ला जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन करके किया गया। कार्यशाला में बच्चों द्वारा स्वागत गीत, सरस्वती वंदना आरंभ है प्रचंड पर बड़ी ही मनमोहक प्रस्तुति दी गई। तत्पश्चात जनपद के उत्कृष्ट शिक्षकों द्वारा अपने विद्यालयों में किए गए नवाचार का पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया गया। जिसकी सराहना सभी ने की कार्यशाला में टी एल एम (शिक्षण अधिगम सामग्री) स्टॉल लगाया गया जिसका अवलोकन विभागीय उच्चाधिकारियों एवं कार्यशाला में पधारे समस्त शिक्षकों द्वारा किया गया। मुख्य रूप से सबा रिजवी चाका, ममता गुप्ता हंडिया, होरीलाल जसरा, शालिनी मालवीय, नीलिमा श्रीवास्तव, अमर सिंह अनुदेशक आदि सभी का TLM बहुत ही आकर्षक था। पीपीटी प्रस्तुतीकरण में शाजिया, श्वेता राजकुमार दुबे, अग्नि प्रकाश शर्मा, सत्य प्रकाश,वंदना श्रीवास्तव, सरिता दुबे, नीलिमा श्रीवास्तव, इरम मिहाज, दुर्गावती मिश्रा, शोभी वर्मा ने सभी को प्रभावित एवं विद्यालय में अच्छा करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन श्वेता श्रीवास्तव जी ने किया। मिशन शिक्षण संवाद के जिला संयोजक अंतरिक्ष शुक्ला ने बताया कि कार्यक्रम में सहायक शिक्षा निदेशक बेसिक रमेश कुमार तिवारी, डायट प्राचार्य प्रवीण कुमार तिवारी, बीएसए संजय कुमार कुशवाहा, खंड शिक्षा अधिकारी डॉ0 संतोष कुमार यादव चाका, नरेंद्र सिंह बहादुरपुर, अनिल सिंह मांडा,

सीताराम यादव कोराव, राजीव त्रिपाठी जिला एमडीएम प्रभारी आदि अनेक गणमान्य विशिष्ट अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यशाला में भदोही से ज्योति कुमारी, आशीष सिंह, मिर्जापुर से विनोद मिश्रा, रविकांत द्विवेदी एवं कौशांबी से दीप नारायण मिश्रा आदि मिशन के सिपाही भी शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला में सम्मिलित हुए। कार्यशाला के अंत में सभी को एडी बेसिक एवं डायट प्राचार्य के हाथों से मोमेंटो एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए। कार्यशाला से उपस्थित शिक्षकों को बहुत कुछ नया सीखने को मिला। एवं सभी अधिकारियों एवं पधारे हुए शिक्षकों ने मिशन शिक्षण संवाद के इस मंच की भूरि–भूरि प्रशंसा की जिसके माध्यम से उत्कृष्ट शिक्षकों को इस मंच के द्वारा अपने द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों को जनपद एवं प्रदेश स्तर पर प्रस्तुतीकरण का मौका मिला।

मिशन शिक्षण संवाद

अध्यक्षा
समिति

मिशन शिक्षण संवाद
बाल पत्रिका
बेटियां है शान हमारी..
बेटियां अभिमान हमारी..
काम करते बच्चे..
लगते है अच्छे...
U.P.S.चित्रवार
मऊ (चित्रकूट)
पंख
17 वां अंक
मार्गदर्शन - सत्य भूषण सिंह चौहान (स.अ.)
संपादक मण्डल
स्वाती केसरवानी
सुहानी गौतम
संजना मिश्रा
ज्योति मिश्रा
ज्योति द्विवेदी
कौशिकी द्विवेदी
ममता द्विवेदी
हरिओम त्रिपाठी
चित्रांकन
रामप्रकाश
सुस्मिता द्विवेदी
अमन त्रिपाठी
राहुल कुमार
संकलन
शिवानी पाण्डेय
प्रियंका त्रिपाठी

पूर्व माध्यमिक विद्यालय चित्रवार (मऊ)

पूर्व माध्यमिक विद्यालय चित्रवार (मऊ)
अध्यक्षा
समिति

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/118010865464649/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात